Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

अप्रैल/ 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

23 फ़रवरी 2020 ई. को ज़िला कोल्लम, त्रिवेन्द्रम (केरला) द्वारा आयोजित मज्लिस-ए-आम्लाके रिफ़्रेशर कोर्स के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण का दृश्य।

23 फ़रवरी 2020 ई. को ज़िला कोल्लम, त्रिवेन्द्रम (केरला) द्वारा आयोजित रिफ़्रेशर कोर्स मज्लिस-ए-आम्ला का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह कड्लाई (केरला) द्वारा खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह चिंताकुंटा (तेलंगाना) द्वारा आयोजित नि:शुल्क मैडिकल कैम्प का दृश्य।

20 फ़रवरी यौम-ए-मुस्लेह मौऊद के उपलक्ष में मज्लिस अन्सारुल्लाह क़ादियान के सदस्य एवं जावेद अहमद साहिब लोन ज़ईम हल्क़ा महमूद क़ादियान रोगियों को फल वितरण करते हुए।

20 फ़रवरी यौम-ए-मुस्लेह मौऊद के उपलक्ष में मज्लिस अन्सारुल्लाह क़ादियान के सदस्य एवं शैख़ नासिर वहीद साहिब ज़ईम अन्सारुल्लाह क़ादियान रोगियों को फल वितरण करते हुए।

मज्लिस अन्सारुल्लाह ज़िला इब्राहीमपूर (बंगाल) द्वारा आयोजित नि:शुल्क मैडिकल कैम्प का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह ज़िला मुर्शिदाबाद (बंगाल) द्वारा आयोजित नि:शुल्क मैडिकल कैम्प का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह बंगलौर द्वारा आयोजित यौम-ए-तबलीग़ का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह बरहापूरा (बिहार) द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ   نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ   وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورة الصف آيت ١٥

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18 अप्रैल 2020 **Issue - 4**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रवचन	3
सम्पादकीय - रमज़ान का महीना नफस की समीक्षा	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - यह रमज़ान ग़ैर मामूली विजय लाने वाला हो	6
रूहानी ख़ज़ायन भाग प्रथम (भाग 2)	8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
तनवीर अहमद मलिक
09781831652

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۴﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَ عَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَ اَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ (सूर: अलबक़र: आयत 184, 185)

अनुवाद - अनुवाद- हे वे लोगो जो ईमान लाए हो, तुम पर रोज़े उसी प्रकार फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे, ताकि तुम तक़वा धारण करो। गिनती के कुछ दिन हैं । अत: जो भी तुमें से रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। और जो लोग इसकी शक्ति रखते हों, उन पर एक दरिद्र को भोजन कराना फिद्य: (प्रायश्चित स्वरूप) है। अत: जो कोई भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है । और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए उत्तम है।

दर्सुल हदीस

अनुवाद - हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. बयान करते हैं कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इंसान के सब काम उसके अपने लिए हैं किन्तु रोज़ा मेरे लिए है और मैं स्वयं इसका प्रतिफल बनूँगा अर्थात उसकी इस नेकी के बदले मैं उसे अपने दर्शन दूंगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है- रोज़ा ढाल है, अत: तुम में से जब किसी का रोज़ा हो तो न वह व्यर्थ बातें करे, न आतंक और शोर मचाये। यदि उसके साथ कोई गाली गलोच करे अथवा लड़ाई झगड़ा करे तो वह जवाब में कहे कि मैंने तो रोज़ा रखा हुआ है। क़सम है उस ज़ात की जिसके सम्पूर्ण नियंत्रण में मुहम्मद[स.] के प्राण हैं, रोज़ेदार के मुंह की दुर्गन्ध अल्लाह तआला की दृष्टि में कस्तूरी से भी अधिक पवित्र और सुगन्धित है क्यूंकि उसने अपनी यह दशा ख़ुदा तआला के लिए की है। रोज़ेदार के भाग्य में दो प्रसन्नताएँ हैं, एक प्रसन्नता उसे उस समय होती है जब वह रोज़ा खोलता है तथा दूसरी उस समय होगी जब रोज़े के कारण उसे अल्लाह तआला के दर्शन प्राप्त होंगे।

(बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब हल यक़ूल इन्नी साइम इज़ा शुतिमा)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

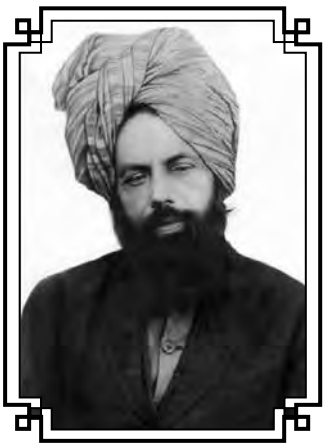

रमज़ान का महीना
दिल की रौशनी के लिए उत्तम महीना है

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰی وَ الْفُرْقَانِ (सूरः अलबक़रः 186) से माह ए रमज़ान का उत्तम स्तर ज्ञात होता है। सूफियों ने लिखा है कि यह महीना मन के प्रकाश के लिए उत्तम महीना है, बहुलता से इसमें कश्फ़ होते हैं, नमाज़ मन को शुद्ध करती है और रोज़ा दिल को उज्जवल करता है। मन की शुद्धि का अभिप्रायः यह है कि तामसिक वृत्ति से दूरी प्राप्त हो जाए और मन की उज्ज्वलता यह है कि कश्फ़ का द्वार उसपर खुले कि ख़ुदा को देख ले। अतः اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ में यही संकेत है इसमें कोई भ्रान्ति एवं संदेह नहीं कि रोज़े का प्रतिफल विशाल है किन्तु रोग और स्वार्थ इस पुरस्कार से इंसान को दूर रखते हैं.....एक बार मेरे मन में विचार आया कि फ़िदया किस लिए रखा गया है तो ज्ञात हुआ की सामर्थ्य के लिए है ताकि रोज़े की तौफीक़ उससे प्राप्त हो। ख़ुदा तआला ही की ज़ात है जो सामर्थ्य प्रदान करती है तथा प्रत्येक वस्तु ख़ुदा तआला ही से मांगनी चाहिए। ख़ुदा तआला तो सर्वशक्ति शाली है, वह यदि चाहे तो एक क्षय रोगी को भी रोज़े का सामर्थ्य प्रदान कर सकता है। तो फ़िदये का यही उद्देश्य है कि वह शक्ति प्राप्त हो जाए, और यह ख़ुदा तआला की कृपा से होता है। अतः मेरे विचारानुसार ख़ूब है कि इंसान दुआ करे कि इलाही, तेरा एक मुबारक महीना है और मैं इसमें असमर्थ हूँ और क्या पता कि अगले वर्ष जीवित रहूँ या न रहूँ, अथवा इन छूटे हुए रोजों को अदा कर सकूं या न कर सकूं और उससे तौफ़ीक़ तलब करे तो मुझे विश्वास है ऐसे दिल को ख़ुदा तआला शक्ति प्रदान कर देगा।

यदि ख़ुदा तआला चाहता तो दूसरी उम्मतों की भांति इस उम्मत में कोई पाबन्दी न रखता किन्तु उसने पाबंदियां भलाई के लिए रखी हैं। मेरी दृष्टि में वास्तविकता यही है कि इंसान सत्य और व्यापक निष्ठा के साथ बारी तआला की सेवा में निवेदन करता है कि इस महीने में मुझे वंचित न रख तो ख़ुदा उसे वंचित नहीं रखता और ऐसी अवस्था में इंसान यदि रमज़ान के महीने में बीमार हो जाए तो यह बीमारी उसके लिए रहमत होती है क्यूंकि प्रत्येक कर्म का आधार उसकी कामना के अनुसार है। मोमिन को चाहिए कि वह अपने अस्तित्व से अपने आपको ख़ुदा तआला की राह में दिलावर साबित कर दे। जो व्यक्ति रोज़े से वंचित रहता है परन्तु उसके दिल में यह कामना दिल के दर्द के साथ थी की काश मैं स्वस्थ होता और रोज़ा रखता और उसका दिल इस बात के लिए तड़पता है तो फ़रिश्ते उसके लिए रोज़े रखेंगे किन्तु शर्त यह है की वह बहाना बनाने वाला न हो तो ख़ुदा ताला उसे कदाचित सवाब से वंचित न रखेगा"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 561 से 564 तक, संस्करण 2003 क़ादियान)

सम्पादकीय

रमज़ान का महीना तथा नफस की समीक्षा

इन्सान की तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है कि अपने नफ़स की निगरानी करता रहे। ताकि जो कमियां और त्रुटियां सामने आएं उन्हें दूर करने की कोशिश कर सके। और नफ़स की पवित्रता के लिए पहले से बढ़कर मेहनत कर सके। रुहानी मैदान में तरक़्क़ी कर सके। अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में इन्सान को हमेशा अपना विश्लेषण करते रहने की नसीहत की है। ताकि वह रोज़ाना इलाही सानिध्य के मैदान में आगे ही आगे बढ़ता जाए। जैसा कि फरमाता है।

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ

(अलहशर 19)

अर्थात हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह का तक़्वा धारण करो और हर जान यह नज़र रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रही है।

इस आयत से स्पष्ट है कि अपनी हिसाब करना बहुत ज़रूरी है। हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) हर रात बिस्तर पर जाने से पहले ख़ुद अपना जायज़ा लिया करते थे। आप ने फ़रमाया। "अक़लमंद वह है जिस ने अपने नफ़स को इबादत में लगाया उस का हिसाब किया और मौत के बाद पेश आने वाले मामलों के लिए तैयारी की और बेवक़ूफ़ वह है जो अपने नफ़स की पैरवी करे और अल्लाह तआला से उम्मीद रखे।"

(तिर्मिज़ी अबवाबुस्सिफत अल-कियाम)

हज़रत उम्र फ़ारूक रज़ि का मशहूर कथन है कि "अपने नफ़सों की समीक्षा कर लो उस से पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाए। बड़ी पेशी के लिए अपने आपको तैयार कर लो और क़यामत के दिन उस आदमी का हिसाब आसान हो जाएगा जिसने इस दुनिया में अपना हिसाब किया। (तिर्मिज़ी)

ज़माना के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"ख़ुदा तआला भी इन्सान के कर्मों का रोज़-नामचा बनाता है। अत: इन्सान को भी अपने हालात का एक रोज़-नामचा तैयार करना चाहिए और इस में ग़ौर करना चाहिए कि नेकी में कहाँ क़दम आगे रखा है। इन्सान का आज और कल बराबर नहीं होने चाहिऐं। जिसका आज और कल इस लिहाज़ से कि नेकी में क्या तरक़्क़ी की है बराबर हो गया वे घाटे में है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 455)

"चाहिए कि हर एक सुबह तुम्हारे लिए गवाही दे कि तुमने तक़्वा से रात व्यतीत की और हर एक शाम तुम्हारे लिए गवाही दे कि तुमने डरते-डरते दिन व्यतीत किया।"

(कश्ती नूह,रुहानी ख़ज़ायन भाग19 पृष्ठ 12)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया مَنْ صَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًاوَاِحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ कि जिस आदमी ने ईमान की हालत में और नफ़स की समीक्षा करते हुए रमज़ान के रोज़े रखे उस को इस के पिछले गुनाह बख़श दिए जाऐंगे (बुख़ारी किताबुल ईमान) रमज़ानुल मुबारक में नफ़स की समीक्षा के लिए उत्तम

अवसर और एक उत्तम माहौल मिलता है। अत: ज़रूरी है कि इन्सान भी सारा साल अपने नफ़्स को टटोले और नफ़्स की समीक्षा करता रहे कि किन किन कमियों को अभी दूर करना बाक़ी है। इस अन्तर्गत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"हमें रमज़ान की प्रतीक्षा करनीना चाहिए। तभी हम पिछले साल में जो रमज़ान गुज़रा है इस से लाभ उठाते हुए, इस में जो हम ने नेकियां की थीं, जो तक़्वा धारण किया था, जो मंज़िलें हम ने हासिल की थीं, उनका फ़ैज़ पा सकते हैं। इस रमज़ान में यह जायज़ा लेना चाहिए कि पिछले रमज़ान में जो मंज़िलें हासिल हुई थीं क्या उन पर हम क़ायम हैं। कहीं इस से भटक तो नहीं गए। अगर भटक गए तो रमज़ान ने हमें क्या लाभ दिया। और यह रमज़ान भी और अगले आने वाले रमज़ान भी हमें क्या फ़ायदा दे सकेंगे। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 7 अक्तूबर 2005 ई ख़ुत्बाते मसरूर भाग 3 पृष्ठ 594)

अल्लाह तआला से दुआ है कि इस रमज़ान में हम अपना नफ़्स की समीक्षा ऐसे करें कि हर दिन जो हम पर चढ़े हमें नेकी में आगे बढ़ाने वाला हो। आमीन

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़)

❁❁❁

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

यह रमज़ान जमाअत के लिए ग़ैरमामूली फ़ुतूहात लाने वाला हो

रमज़ान दुआओं के लिए उचित और उत्तम महीना है। क्योंकि रोज़ा और दुआ का आपस में गहरा सम्बन्ध है। इसी सम्बन्ध के कारण से कुरआन करीम में रोज़ों के आदेशों के ठीक मध्य दुआ का विषय वर्णन किया गया है। अत: अल्लाह तआला फरमाता है।

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

(अलबकर187)

अनुवाद: और(हे रसूल)जब मेरे बंदे तुझ से मेरे बारे में पूछें तो जवाब दे कि मैं उनके पास ही हूँ जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं इस की दुआ स्वीकार करता हूँ सो चाहिए कि वे दुआ करने वाले भी मेरे हुक्म को क़बूल करें और मुझ पर ईमान लाऐं ताकि वे हिदायत पाएं।

हदीस में आता है कि रमज़ान की हर रात अल्लाह तआला मुनादी करने वाले एक फ़रिश्ता को अर्श से फ़र्श पर भेजता है। जो यह ऐलान करता है कि

یَا بَاغِیَ الْخَیْرِ هَلُمَّ هَلْ مِنْ دَاعٍ یُسْتَجَابُ لَهُ، هَلْ مِنْ یُسْتَغْفِرٍ یُسْتَغْفَرُ لَهُ هَلْ مِنْ تَائِبٍ یُتَابُ عَلَیْهِ هَلْ مِنْ سَائِلٍ یُعْطٰی سُؤْلَهُ

(शुअबुल ईमान बाब फ़ज़ाइलुल सौम)

अर्थात हे भलाई के इच्छुक आगे बढ़। क्या कोई है जो दुआ करे ताकि उस की दुआ क़बूल की जाए ? क्या कोई है जो इस्तिग़फ़ार करे कि उसे बख़श दिया जाए? क्या कोई है जो तौबा करे ताकि उस की तौबा क़बूल की जाए? क्या कोई है जो सवाल करे जिसको पूरा किया जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"रमज़ान का महीना मुबारक महीना है दुआओं का महीना है।"

(अलहकम 2 जनवरी 1901 ई)

इस साल रमज़ान-मुबारक में हम सब के लिए ज़रूरी है कि जहां हम इस्लाम तथा अहमदयित की विजय और विश्व शान्ति के लिए बहुत अधिक विनय से दुआएं करें। साथ ही अपनी और अपने प्रियों के लिए भी निरन्तरता के साथ दुआएं जारी रखें।

हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"जो पहली हदीस में फ़रमाया था कि हज़ारों और लाखों को क्षमा कर देगा उस को यहां और अधिक स्पष्ट किया गय है कि रोज़े ईमान की हालत में अगर होंगे। रोज़े भी रख रहे होंगे और ईमान की हालत में रख रहे होंगे, जो रखने का हक़ है वह अदा कर रहे होंगे, अपने नफ़स का मुहासिबा भी कर रहे होंगे, अपने आपको भी देख रहे होंगे, ये नहीं कि सिर्फ दूसरों की बुराईयों पे नज़र हो बल्कि अपना भी जायज़ा ले रहे होंगे, अल्लाह तआला के ख़ास बंदे बनने वाले होंगे तो फिर बरकतों से फ़ैज़ पाने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें रोज़े को समस्त शर्तों के साथ रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और विशेष रूप से

अल्लाह तआला के लिए रोज़े रखने वाले हों न कि दुनिया के दिखावे के लिए। कोई नफ़्स का बहाना हमारे रोज़े रखने में रोक न हो और इस महीने में अपनी इबादतों को भी ज़िन्दा करने वाले हों। अल्लाह तौफ़ीक़ दे। और जब नेकियों के रास्ते पर इस रमज़ान में चलें यह भी इस रमज़ान में दुआएं करते रहना चाहिए कि नेकियां रमज़ान के ख़त्म होने के साथ ख़त्म न हो जाएं बल्कि हमेशा हमारी ज़िंदगियों का हिस्सा बनी रहें। और हम में से हर एक अल्लाह तआला के प्यारों में शामिल हो, उस का प्यार हासिल करने वाला हो और हमेशा उस के प्यार की नज़र हम पर पड़ती रहे। और यह रमज़ान हमारे लिए, जमाअत के लिए ग़ैरमामूली विजय लाने वाला हो।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 15 अक्तूबर 2004 ई)

प्यारे भाईयो हुज़ूर अनवर के उपदेशों के अनुसार जमाअत की ग़ैरमामूली विजयों और मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की महान तरक्कियों के लिए मक़बूल दुआएं करने की हमें तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के लिए नीचे लिखी तारीखें निर्धारित की हैं।

दिनांक 16.17. 18 अक्तूबर 2020 ई
जुम्अः हफ्ता तथा रविवार

इज्तिमा में होने वाले प्रोग्रामों के बारे में पहले सर्कुलर नम्बर 2 भिजवाया गया है। इस सर्कुलर के अनुसार अन्सार को अभी से तय्यार करें. और अधिक से अधिक संख्या में अन्सार को इज्तिमा में शामिल होने की तरफ ध्यान दिलाएं।

इज्तिमा के अवसर पर पहले की तरह मज्लिस शूरा का आयोजन भी होगा (इन्शा अल्लाह) मज्लिस शूरा में शामिल होने वाले चुने गए अन्सार की सूची भी कम से कम एक महीना पहले मर्कज़ में भिजवाऐं।

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

पुस्तक परिचय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रूहानी ख़ज़ाइन - भाग प्रथम

भाग-2

वे ख़ज़ाएन जो हज़ारों साल से मदफ़ून थे अब मैं देता हूँ अगर कोई मिले उम्मीदवार

हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं-

"आजकल के ज़माने में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की किताबों को भी पढ़ने की ओर ध्यान देना चाहिए तथा उनसे भी लाभ प्राप्त करना चाहिए, यह भी क़ुर्आन करीम की एक व्याख्या एवं तफ़सीर है जो हमें आप अलै. की किताबों से मिलती है।

इसकी ओर ध्यान देना चाहिए तथा ये किताबें अवश्य पढ़नी चाहिएँ और इन्हीं किताबों से आपको प्रमाण मिल जाते हैं लोगों की आपत्तियों के उत्तर देने के, और यही आजकल तरीक़ा है आपकी मजलिसों से लाभान्वित होने का, आपकी संगति से लाभ प्राप्त करने का, पहले भी मैं कहता रहा हूँ कि आप अलै. की पुस्तकें पढ़ने की ओर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाए और इससे हमें विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर भी मिलेंगे और क़ुर्आन करीम के ज्ञान का भी बोध प्राप्त होगा"

(ख़ुत्बः जुम्अः 18 जून 2004, ख़ुत्बाते मसरूर, भाग दो, पृष्ठ 414, 415)

निवेदन

यह केवल अल्लाह तआला की कृपा एवं उपकार है कि आज हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन ऑन लाईन जमाअती वैब साईट पर कर सकते हैं तथा ऑडयो भी सुन सकते हैं। जो दोस्त उर्दू पढ़ना नहीं जानते वे ऑन लाईन इंगलिश में भी अध्ययन कर सकते हैं तथा सय्यना हुज़ूर-ए-अनवर के इरशाद पर जमाअतों में क़ायम लाईब्रेरियों से लाभान्वित होते हुए रूहानी ख़ज़ाइन का अध्ययन किया जा सकता है। दोस्तों को इसकी ओर ध्यान और रूचि पैदा करने के लिए रूहानी ख़ज़ाइन की जिल्दों का संक्षिप्त परिचय पेश करने की श्रृंखला जारी की जा रही है। आशा है कि जमाअत के दोस्त लाभ प्राप्त करेंगे।

(नज़ारत इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

यह वह महान पुस्तक है जो अपने युग की आवश्यकतानुसार अद्वित्तीय पुस्तक साबित हुई जिसका विरोध करने से समस्त इस्लाम का इंकार करने वाले असहाय हो गए और इस्लाम को महान विजय प्राप्त हुई। ऐसी किताब के प्रकाशन एवं प्रसारण में सहयोग देने के लिए मुस्लिम मुख्याओं तथा साधारण और विशेष वर्ग से निवेदन किए गए परन्तु केवल कुछ मुसलमानों ने सहयोग किया तथा पेशगी रुपया मूल्य के रूप में भेजा। बराहीने अहमदिया के पृष्ठ 10,12 पर लेखक ने इन सहयोगियों के नाम तथा धन राशि का उल्लेख किया है जिनका कुल योग पाँच सौ रुपए से भी कम है। आप अलै. ने उनका आभार प्रकट करते हुए उनके नामों के वर्णन का यह कारण लिखा है-

"ता जब तक सफ़हाए रोज़गार में नक़्श अफ़ादा और अफ़ाज़ा इस किताब का बाक़ी रहे, हर एक

मुस्तफ़ीज़ कि जिसका इस किताब से वक़्त ख़ुश हो मुझको और मेरे मुआविनीन को दुआए ख़ैर से याद करे"

(बराहीने अहमदिया, चारों भाग, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग एक, पृष्ठ 5)

दस हज़ार रुपए का पुरस्कार

"मैं जो लेखक इस किताब बराहीने अहमदिया का हूँ यह इश्तिहार अपनी ओर से दस हज़ार रुपए के पुरस्कार का वादा समस्त धर्मों के लोगों के लिए करता हूँ जो फ़ुरक़ान-ए-मजीद और मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के इंकारी हैं इतमामे हुज्जत (अंतिम सीमा तक समझाना) के रूप में प्रकाशित करके वैधानिक घोषणा, शरीअत के जायज़ एहद के अनुरूप करता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति इंकार करने वालों में से, अपनी किताब की सहायता से फ़ुरक़ान-ए-मजीद के प्रमाणों तथा निशानों को जो हमने फ़ुरक़ान-ए-मजीद के लिए तथा हज़रत ख़ातमुल अंम्बिया की सत्यता तथा रिसालत का सत्यापन इसी पवित्र पुस्तक से निकालकर लिखे हैं अपनी इलहामी पुस्तक में से साबित करके दिखलावे अथवा यदि संख्या में उनके बराबर पेश न कर सके तो उनसे आधे या एक तिहाई या एक चौथाई अथवा पांचवाँ भाग ही उनसे निकाल कर पेश करे अथवा यदि पूर्ण रूप से पेश करने में असमर्थ हो तो हमारे ही प्रमाणों को नम्बर वार तोड़ दे तो इन सारी अवस्थाओं में इस शर्त के साथ कि तीन न्यायप्रिय प्रतिष्ठित पक्षकार अपनी सहमति के साथ अपना मत पेश कर दें कि शर्त के अनुसार जैसा कि चाहिए था, ज़ाहिर हो गया है। मैं इश्तिहार कर्ता ऐसे व्यक्ति को बिना कोई बहाना बनाए अपनी सम्पत्ति में से दस हज़ार रुपए की सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा तथा सम्पूर्ण अधिकार दे दूँगा।"

(मजमूअ: इश्तिहारात, भाग एक, पृष्ठ 72,73)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन करके यथासम्भव लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(नज़ारत इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

(शेष भाग अगले अंक में)

❁❁❁

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

अपनी नमाज़ों को सँवारो। इस्तिग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा करो।

हज़रत ख़लीफतुल मसीहलि ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई में जमाअत के लोगों को नसीहत करते हुए फ़रमाया

" बार-बार जिस बात की हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नसीहत फ़रमाई है वह यह है कि हम आपकी बैअत में आने के बाद अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान करें। सिर्फ दिखावे का ध्यान नहीं बल्कि वास्तविक ध्यान हो। कल ख़ुत्बा में भी मैं ने ज़िक्र किया था कि किस तरह ध्यान हो किस तरह अल्लाह तआला से मुहब्बत क़ायम की जाए। अपनी नमाज़ों को सँवारो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी बात पर-ज़ोर दिया कि अपनी नमाज़ों को सँवारो। इस्तिग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा करो। इस्तिग़फ़ार करने से आदमी बहुत सी ग़लत किस्म की इच्छाओं से बचता है, ग़लत कामों से बचता है। इस्तिग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा की ज़रूरत है। आप ने फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार करते रहो और मौत को याद रखो। हमेशा अल्लाह तआला से बख़शिश माँगो और याद रखो कि मौत यक़ीनी है। एक रोज़ आनी है। जब इन्सान मौत को याद रखता है तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ तवज्जा पैदा होती है। यह एहसास होता है कि यह दुनिया जो सिर्फ कुछ दिन की है यही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद नहीं है बल्कि मरने के बाद की ज़िन्दगी ही असल ज़िन्दगी है और जब उस की हक़ीक़त पता चल जाएगी, उस का एहसास हमारे दिल में पैदा होगा तो फिर दुनियावी चीज़ों की प्राप्ति के लिए हमारी जो हर वक़त कोशिशें रहती हैं वो नहीं होंगी।.....

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: एक अहमदी मोमिन और मोमिना में धर्म में एक दूसरे के आगे बढ़ने की रूह होनी चाहिए न कि दुनियावी चीज़ों के लिए। और जब इस सोच के साथ हम अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करते हैं तो अल्लाह तआला जो बड़ी व्यापक रहमत और मग़फ़िरत वाला है जो अपनी तरफ़ आने वाले बंदे से बे-इंतिहा प्यार का सुलूक करता है वह बंदों की नेक इच्छाओं और दुआओं को सुनता है उनके नेक अनुकरण को क़बूल करता है।

(अख़बार अल्फज़ल इन्ट्रनेशनल)

❁❁❁